Success Story 2018-19

शिमला मिर्च की उन्नत खेती

रुपेश जायसवाल

पता – ग्राम – खडौदा, बलक – सहसपूर लोहारा, जिला – कबीरधाम

रुपेश जायसवाल (नवोन्वेषी कृषक)

विषय : शिमला मिर्च की उन्नत खेती

उम्र – 33 वर्ष

शिक्षा – पोष्ट ग्रेज्युशेन

ग्राम – खडौदा

ब्लाक – सहसपुर लोहारा

जिला – कबीरधाम

नये अन्वेष का विवरण – कृषक श्री रुपेश जायसवाल कवर्धा जिले के ग्राम खडौदा के एक प्रगतिशील कृषक है, उन्होने अपनी शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त कृषि को व्यवसाय के रुप में चुना, वे पूर्ण में परंपरागत तरीके से खाद्यान्न फसलों की खेती करते थे परंतु कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के संपर्क में आने के बाद वैज्ञानिक ढंग से सब्जियों एवं फलों की तकनीकी खेती की ओर अग्रसर हुए।

इस वर्ष उन्होने 1 एकड में शासकीय योजना से पाली हाउस का निर्माण कराया जिसमें शिमला मिर्च की खेती प्रारंभ की फसल बहुत अच्छा रहा कीट एवं बीमारियों का प्रकोप कम रहा एवं बाजार में अच्छी मांग होने से इस वर्ष 3.50 लाख का शुध्द मुनाफा प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त खेतों में बैगन एवं पपीता का खेती भी किया बैगन में इस वर्ष एक एकड़ में 100000/– का शुध्द मुनाफा प्राप्त हुआ एवं 16 एक डमें पपीता का खेती से 38 लाख 51 हजार रुपए की शुध्द आमदनी प्राप्त हुई। इस तरह से इन्होने खेती को बहुत कम समय में उद्यम के रुप में स्थापित कर अधिक आमदनी प्राप्त की है।

कृषि में उपयोगिता एवं लाभ –

1. शिमला मिर्च की उन्नत तकनीक की खेती से आय में 35–40 प्रतिशत की वृध्दि ।
2. अनाज वर्गीय फसलों के स्थान पर पपीते की खेती से आमदनी में पांच गुना अधिक वृध्दि हुई।
3. वर्ष भर श्रमिकों को कार्य की उपलब्धता।
4. क्षेत्र के किसानों का खेती की नए तकनीक की ओर रुझान

मूल्य संवर्धन से आय में वृध्दि

श्री युगल किशोर चंद्रवंशी

पता – ग्राम – राम्हेपुर, ब्लाक – कवर्धा, जिला – कबीरधाम

युगल किशोर

विषय : मूल्य संवर्धन से आय में वृध्दि
नाम – श्री युगल किशोर चंद्रवंशी
पिता – श्री कृपा राम चंद्रवंशी
उम्र – वर्ष
शिक्षा – बारहवीं
ग्राम – राम्हेपुर
ब्लाक – कवर्धा
जिला – कबीरधाम
मोबाइल – 99779 56495

नये अन्वेष का विवरण – श्री युगल किशोर चंद्रवंशी कबीरधाम जिले के ग्राम राम्हेपुर के एक मध्यमवर्गीय परिवार के कृषक है। वे शुरुआत में खेतों में अनाज वर्गीय फसलों की खेती खरीफ एवं रबी सीजन में करते थे जिससे आमदनी में अधिक वृध्दि नही हो पा रही थी एवं खेती में लागत बढता जा रहा था। जिसके बाद उन्होने 2 एकड़ में गन्ने की खेती की तथा गन्ना को शक्कर कारखाना में विक्रय नही किया एवं अपने गांव मे ही गन्ना का मूल्य संवर्धन कर गुड बनाने का कार्य प्रारंभ किया जिससे उन्हे प्रति एकड 1.50 लाख से 2.00 लाख रुपये की शुध्द आमदनी प्राप्त हुई। इस तरह से फसल चक्र परिवर्तन के साथ उन्होने मूल्य संवर्धन कर आय दोगुनी की है। वर्तमान में 10 एकड़ में उनकी शुध्द वार्षिक आय लगभग 12 लाख रुपये है।

कृषि में उपयोगिता एवं लाभ –

1. मूल्य संवर्धन से आय में वृध्दि
2. वर्ष भर श्रमिकों को कार्य की उपलब्धता
3. बाजार में कृषकों की सहभगिता को सुनिश्चित करना
4. कृषि के अतिरिक्त मूल्य संवर्धन को उद्यम के रुप में स्थापित करना।

जीरो बजट फार्मिंग

श्री सुभाष पाण्डेय

ग्राम – घोठिया, ब्लाक – कवर्धा, जिला –

परिचय

परिचय नाम – श्री सुभाष पाण्डेय
उम्र – 31 वर्ष
शिक्षा – स्नातक
ग्राम – घोठिया
ब्लाक – कवर्धा
जिला – कबीरधाम
विषय : जीरो बजट फार्मिंग
मोबाइल – 77719 91777
कुल रकबा – 2.0 हेक्टे.
फसल – सब्जी, फल, धान, अरहर

नये अन्वेष का विवरण – श्री सुभाष पाण्डय कवर्धा जिला के कृषक है वे विगत 10 वर्षो से कृषि कार्य कर रहे है, दो वर्ष पूर्व कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में जैविक खेती के महत्व पर प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात जैविक खेती की ओर उनका रुझान बढा। उसके बाद पूर्ण रुप से जैविक कीटनाशियों, जैव उत्पाद का निर्माण अपने प्रक्षेत्र में प्रारंभ किया जिसका उपयोग वे फल सब्जियों की खेती में करते है। जेव उत्पाद के अंतर्गत डिकम्पोसर, स्यूडोमोनास, माइकोराइजा निर्माण कर खेती के लागत को बहुत कम किया है। वर्ष भर जेव उत्पाद का निर्माण करते है जिससे खेती की लागत 60–70 हजार रुपए आती है, एवं उन्हे 4–4.5 लाख रुपए का शुध्द मुनाफा प्राप्त होता है। खेती के अतिरिक्त डयरी प्रबंधन में भी पूर्णतः जैविक चारे का उपयोग करते है, जिसके कारण बाजार में जैविक दूध की मांग बढ गई है। गाय के गोबर एवं मूत्र का उपयोग जैविक खाद बनाने में करते है इस तरह से खाद एवं दवाइयों में होने वाले खर्च को पूरी तरह से खत्म कर जीरो बजट फार्मिंग का अच्छा उदाहरण पेश किया है।

कृषि में उपयोगिता –

1. खेती की लागत मे कमी
2. घर मे ही जैव किटनाशियों जैविक खाद एवं उत्पादों का उत्पादन
3. वर्ष भर श्रमिकों को कार्य
4. फसल के अपशिष्टो का बेहतर तरह से प्रबंधन एवं उपयोग।

जैविक पध्दति से दुबराज धान की खेती

श्री प्रभात चंद्राकर

ग्राम – भरेवापुरन, ब्लाक – पण्डरिया जिला – कबीरधाम

परिचय

नाम – श्री प्रभात चंद्राकर
पिता – श्री सुंदर लाल चंद्राकर
उम्र – 53 वर्ष
ग्राम – भरेवापुरन
ब्लाक – पण्डरिया
जिला – कबीरधाम
रकबा – 20 एकड़
फसल – धान, चना, मसुर, अरहर,
नवाचार – जैविक पध्दति से दुबराज धान की खेती

श्री प्रभात चंद्राकर को वर्ष 2013.14 में राष्ट्रीय कृषि कर्मठ पुरूस्कार प्राप्त हआ

नए अन्वेषण का विवरण – श्री प्रभात चंद्राकर कबीरधाम जिले के ग्राम भरेवापुरन गांव के एक प्रगतिशील कृषक है। वे लगभग 25 वर्षो से कृषि कार्य कर रहे है मुख्य रुप से धान, अरहर, मसूर, चना एवं गेंहू की खेती करते है। पिछले वर्ष कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के वैज्ञानिकों के संपर्क में आने के बाद उन्होने जैविक पध्दति से इस वर्ष 3 एकड़ में दुबराज की खेती की जिसमें उन्हे बहुत अच्छा उत्पादन प्राप्त हुआ एवं खेती में कम लागत आई।

जैविक खेती के प्रमुख घटक निम्न है– 1. डिकम्पोसर – प्रति माह एक बार 200 लीटर डिकम्पोसर का छिड़काव फसल अवधि तक करने से कीट एवं बीमारी व्याधि में भारी कमी आई एवं बालियों का वनज बढ़ा।

2. जीवामृत – 10 लीटर गौमूत्र 10 किलो ताजा गोबर 1/2 किलो गुड़ सभी मिश्रण को 7 दिनों तक सडाने के प्श्चात आठवें दिन मिश्रण को 200 लीटर पानी में मिलाकर खेत में महीने में एक बार स्प्रे करने से पोषक तत्वों की कमी को बढाया जा सकता है, इससे फसल वृध्दि भी होती है।

3. सूक्ष्म जीवामृत – 100 लीटर डिकम्पोसर, 2 किलो अरहर का आटा, 2 किलो मक्के का आटा, 2 किलो सरसों की खली, 2 किलो सुरजमुखी की खली सभी मिश्रण को 15 दिनों तक सड़ाने के पश्चात 5 लीटर मिश्रण को 200 लीटर पानी में घोलकर स्प्रे करना है। इससे फसल की सूक्ष्म पोषक तत्वों की आवश्यकता पूर्ति होती है।

फसल खर्च प्रति एकड़ – 4 हजार रुपए

उत्पादन प्रति एकड़ – 16 क्विटल/एकड

शुध्द लाभ – 30 हजार/ एकड

सामूहिक खेती से उद्यानिकी फसलों के संरक्षण एवं पैदावार में बढोत्तरी

श्री दानेश्वर सिंह परिहार

ग्राम – पथर्रा, पोष्ट – मरका, ब्लाक कवर्धा, जिला – कबीरधाम

परिचय

समूह का नाम – सर्व वर्ग उद्यानिकी उत्पादक कंपनी लिमिटेड
अध्यक्ष – श्री दानेश्वर सिंह परिहार
ग्राम – पथर्रा
पोष्ट – मरका
ब्लाक कवर्धा
जिला – कबीरधाम
पंजीयन कमांक –
U01117CT2016PTC00731
730.05.2016
मोबाईल नं. 97550 90602

सफलता का क्षेत्र – उद्यानिकी फसलों जैसे अमरुद, खेखसी, बैगन, टमाअर, मिर्च की देशी प्रजातियों का संरक्षण एवं सवंर्धन कार्य तथा कृषकों कासमूह बनाकर उद्यानिकी फसलों की खेती जैसे जिमीकंद, केला, एवं अन्य सबजीवर्गीय फसलों की खेती कर किसानों की आय बढ़ाना।

शासकीय सहायता – कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा तकनीकी मार्गदर्शन एवं उद्यानिकी विभाग द्वारा शासकीय योजनाओं का लाभ

प्रेरणा – कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा

सफलता का विवरण – कृषकों का समूह गठन कर उद्यानिकी फसलों की खेती को बढावा दिया गया जिससे किसानों की आय में बढोत्तरी हुई है, एवं कृषकों के द्वारा देशी किस्मों के बीज संरक्षण के महत्व पर भी जोर दिया गया है। वर्तमान मे समूह के द्वारा सबजी, फल, मूल उत्पादन के अलावा डेयर प्रबंधन एवं मशरुम उत्पादन का ीाी कार्य किया जा रहा है।

सफलता का असर – अब किसान FPO के माध्यम से संगठित होना चाहते है ताकि बाजार में उनके उत्पादो का सही दाम मिल सके एवं कृषि से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके।

अपेक्षाऐं – कृषि की नई तकनीको से किसानों की आय को बढाना।

शुध्द लाभ – 30 हजार/ एकड

समन्वित कृषि प्रणाली के अंतर्गत मछली पालन

श्रीमति विजय लक्ष्मी मानिकपुरी

ग्राम – पनेका, ब्लाक – कवर्धा, जिला – कबीरधाम

परिचय

समूह का नाम – अर्चना स्व सहायता समूह

अध्यक्ष का नाम – श्रीमति विजय लक्ष्मी मानिकपुरी

ग्राम – पनेका

ब्लाक – कवर्धा

जिला – कबीरधाम

मोबाइल नं. – 95896 57110

रकबा – 6.00 एकड़

नवाचार – समन्वित कृषि प्रणाली के अंतर्गत मछली पालन

patrika.com

पत्रिका . कवर्धा. शुक्रवार. 23.12.2016

कवर्धापत्रिका.14

प्रशिक्षण

समन्वित मछली पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रशिक्षण... मछली पालन को लेकर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र व राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड हैदराबाद की ओर से 05 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

समन्वित मछली पालन के विषय पर यह कार्यक्रम ग्राम पनेका में आयोजित किया गया है। जिसमें 20 प्रशिक्षार्णी भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण का शुभारंभ 19 दिसंबर को कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि अटारी जोन 7 जबलपुर के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एसआरके सिंह रहे। उन्होंने समन्वित मछली पालन के उद्देश्य व मछली पालन में संभावनाओं को बताया। मछलीपालन के साथ अन्य इकाई को अपना कर मत्स्य कृषक अपने आय के स्त्रोत में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। मत्स्य कृषकों से मिलकर उनकी समस्या सुनकर समाधान भी बताया। वाईके डिंडोरे ने प्रदेश में मछली पालन की संभावनाएं व समन्वित मछली पालन के लाभ के साथ मोनोसेक्स तिलपिया मछली की जानकारी दिए। उनके लाभ के बारे में बताया साथ ही साथ मछली सह सुकर पालन की संभावनाओं से भी अवगत कराया। कार्यक्रम में डॉ. बीपी त्रिपाठी, मनीषा खापर्डे, मत्स्य कृषक व कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक उपस्थित थे।

प्रेरणा – कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा

सफलता का असर – जिले के अन्य गांवो की महिला समूह को इनकी सफलता से नई दिशा मिली है, कुछ ओर समूह मछली पालन की ओर अग्रसर हो रहे है।

अपेक्षाऐं – तालाबों के संरक्षण के साथ मछली पालन कर आजीविका के साधन को बढाकर महिलाएं सशक्त हो सकती है।

सफलता का सारांश – मछली पालन द्वारा महिला साशक्तिकरण को बढावा देना।

सफलता का क्षेत्र – समन्वित मछली पालन प्रणाली के द्वारा महिला समूह की आय में बढ़ोत्तरी।

शासकीय सहायता – कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा एवं NFDB हैदराबाद के संयुक्त तत्वाधान में महिला समूह को 5 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया। एवं मछली पालन विभाग द्वारा मछली पालन हेतु शासकीय योजनाओं का लाभ दिया गया।

सफलता का विवरण – महिला समूह के द्वारा वर्ष 2012–13 से महिला पालन किया जा रहा था परंतु उनके द्वारा समन्वित कृषि प्रणाली के रुप में खेती नहीं की जा रही थी, जिसके कारण कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के माध्यम से उन्हे समन्वित मछली पालन प्रणाली के बारे में जानकारी दी गई एवं उन्हे फिंगरलिंग उपलब्ध कराया गया । जिससे उनकी आय वर्षवार निम्न हुई –

वर्ष	शुध्द लाभ
2012–13	75,000 / –
2013–14	98,000 / –
2014–15	1,25,000 / –
2015–16	1,50,000 / –
2016–17	2,00,000 / –

SUCCESS STORY -1

1. **नाम** – श्री सुभाष चंद्र पाण्डेय
2. **पता** – राजमहल चौक, वार्ड क्रमांक 20 कवर्धा जिला कबीरधाम (छ.ग)
3. **शिक्षा** – स्नातक
4. **उम्र** – 31 वर्ष
5. **तकनीक का नाम व विवरण (200 शब्दों में)** – सब्जियो की जैविक की खेती

कृषक श्री सुभाष चंद्र पाण्डेय 2 हेक्टेयर में सब्जी, धान, अरहर एवं डेयरी पालन द्वारा समन्वित कृषि प्रणाली द्वारा जैविक विधि से खेती वर्ष 2016 से कर रहे है। जैविक कीटनाशी एवं जैविक खाद का उत्पादन स्वयं अपने घर करते है जिसका उपयोग कीड़े एवं बिमारियों के नियंत्रण एवं फसल के उर्वरक आवश्यकताओं की पूर्ति भी जैविक विधि से करते है। इनके द्वारा डिकम्पोसर, पंचगव्य, निमास्त्र, ब्रम्हास्त्र एवं दसपर्णी सत्त जैसे विभिन्न जैविक कीटनाशियों को तैयार करके समय–समय पर फसलो में छिड़काव करते है जिससे कीड़े एवं बिमारियों में अतिरिक्त व्यय एवं खेती की लागत में कमी आई है। श्री सुभाष चंद्र पाण्डेय जैविक कीटनाशक दवाओं का निर्माण कर कृषि की लागत कम करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम व कृषि वैज्ञानिकों के तकनीकी मार्गदर्शन से प्रेरित होकर नवीन तकनीकों को खेती में अमल कर कम उत्पादन में अधिक आय प्राप्त कर रहे है।

6. **तकनीक कितने वर्ष से अपना रहा है** : 02 वर्ष
7. **तकनीकी जानकारी प्राप्त करने का स्थान** : कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
8. **तकनीकी का प्रसार** :– (1) कृषकों की संख्या : 06
   (2) क्षेत्र विस्तार (हे./एकड़): 20 एकड़
9. **इस तकनीकी के अन्तर्गत कुल क्षेत्र** : (1) किसान स्वयं का : 5 एकड़
   (2) अन्य किसानों का : 15 एकड़
10. **किसानों द्वारा स्वयं की तकनीक अपनाने से** – (सकल लाभ) : 5.50 लाख
    (शुद्ध लाभ) : 3.50 लाख
    (ब) प्रतिवर्ष रोजगार उपलब्धता (दिनों में) : 360 दिन

SUCCESS STORY -2

1. **नाम** – श्री प्रभु राम ध्रुर्वे
2. **पता** – ग्राम जोराताल, कवर्धा जिला कबीरधाम (छ.ग)
3. **शिक्षा** – 5 वी
4. **उम्र** – 50 वर्ष
5. **तकनीक का नाम व विवरण (200 शब्दों में)** – चौड़ी क्यारी मांदा विधि

कृषक श्री प्रभु ध्रुर्वे 2 हेक्टेयर में सोयाबीन, धान, अरहर एवं चना की खेती वर्ष 2016 से कर रहे है। ये पहले परम्परागत विधि से खेती करते थे। इस विधि में श्रम,समय एवं व्यय अधिक होता था। इससे उनका सालाना वार्षिय आय कम प्राप्त होता है। कृषि की लागत कम करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम व कृषि वैज्ञानिकों के तकनीकी मार्गदर्शन से प्रेरित होकर नवीन तकनीकों को खेती में अमल करने से श्रम,समय एवं व्यय में कमी आई है। जिससे अधिक आय प्राप्त कर रहे है।

6. **तकनीक कितने वर्ष से अपना रहा है** : 02 वर्ष
7. **तकनीकी जानकारी प्राप्त करने का स्थान** : कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
8. **तकनीकी का प्रसार** :– (1) **कृषकों की संख्या** : 06

   (2) **क्षेत्र विस्तार (हे./एकड़)**: 20 एकड़
9. **इस तकनीकी के अन्तर्गत कुल क्षेत्र** : (1) **किसान स्वयं का** : 5 एकड़

   (2) **अन्य किसानों का** : 10 एकड़
10. **किसानों द्वारा स्वयं की तकनीक अपनाने से** – **(सकल लाभ)** : 4.00 लाख

    (शुद्ध लाभ) : 2.50 लाख

    (ब) **प्रतिवर्ष रोजगार उपलब्धता (दिनों में)** : 180 दिन

SUCCESS STORY- 03

1. **नाम** – श्री उमेश कुमार चंद्रवंशी
2. **पता** – ग्राम दौजरी, पोष्ट राम्हेपुर, तहसील कवर्धा जिला कबीरधाम (छ.ग)
3. **शिक्षा** – हायर सेकण्डरी
4. **उम्र** – 28 वर्ष

तकनीक का नाम व विवरण (200 शब्दों में) – समन्वित कृषि प्रणाली अंतर्गत ड्रिप से गन्ना एवं सब्जी की खेती

कृषक श्री उमेश चंद्रवंशी 2 हेक्टेयर में गन्ना एवं 1 एकड़ में देशी सब्जियों जैसें बैगन, मूली, मक्का आदि लगाते है। वे नवाचार के अंतर्गत ड्रिप द्वारा गन्ना एवं सब्जियों की खेती करते है। जिससे पानी एवं खाद की बचत होती है तथा उच्च गुणवत्ता के उत्पाद तैयार होते है। इस तकनीक से गन्ने का उत्पादन 700 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से ले रहे है। जिससे क्षेत्र के किसानो के लिए इस तकनीक के क्षैतिज विस्तार की संभावनाएं बढ़ गई है। साथ ही श्री चंद्रवंशी फसल, सब्जी उत्पादन में भी रसायनिक कीटनाशक दवाओं की लागत को कम करने के लिए प्रतिदिन 3 लीटर ताजा गौमूत्र मटके में एकत्र करते है तथा 15 दिन के बाद धतूरा, नीम, सीताफल की पत्ती, 20–25 ग्राम तम्बाकू पत्ती, 100 ग्राम गुड़, 25 ग्राम मिर्च पावडर कूटकर गौमूत्र में डालकर तैयार करते है। 10–15 लीटर/एकड़ गौमूत्र का उपयोग सब्जियों में लगने वाले कीटों के लिए उपयोग करते है। साथ सब्जियों में दुध का उपयोग फुल बढ़ाने के लिए छिड़काव करते है। श्री उमेश चंद्रवंशी रसायनिक कीटनाशक दवाओं की लागत कम करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम व कृषि वैज्ञानिकों के तकनीकी मार्गदर्शन से प्रेरित होकर नवीन तकनीकों को खेती में अमल कर कम उत्पादन में अधिक आय प्राप्त कर रहे है।

6. **तकनीक कितने वर्ष से अपना रहा है** : 05 वर्ष
7. **तकनीकी जानकारी प्राप्त करने का स्थान** : कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
8. **तकनीकी का प्रसार** :– (1) **कृषकों की संख्या** : 10
   (2) **क्षेत्र विस्तार (हे./एकड़)**: 55 एकड़
9. **इस तकनीकी के अन्तर्गत कुल क्षेत्र** : (1) **किसान स्वयं का** : 5 एकड़
   (2) **अन्य किसानों का** : 50 एकड़
10. **किसानों द्वारा स्वयं की तकनीक अपनाने से – (सकल लाभ)** : 10.50 लाख
    (शुद्ध लाभ) : 7.90 लाख
    (ब) **प्रतिवर्ष रोजगार उपलब्धता (दिनों में)** : 310 दिन